भारतीय ज्ञान परंपरा

डॉ. भगवान सिंह निरंजन

शासकीय महाविद्यालय आलमपुर,

मध्यप्रदेश के हिंदी विभाग में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत।

भारतीय ज्ञान के बारे में हम इतिहास, सामाजिक विज्ञान, साहित्य, दर्शन, संस्कृत में पढ़ते आए हैं। इसके पाठ बिखरे हुए थे, अब उन्हें संकलित किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेख किया गया है कि प्राचीन भारत का ज्ञान और आधुनिक भारत में उसका योगदान पाठ्यक्रम का हिस्सा होना चाहिए। इसी के तहत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की योजना पर देश भर में शिक्षकों को पहले प्रशिक्षित किया जा रहा है, फिर वैकल्पिक रूप में माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाया जाएगा। इस प्रकार की योजना तैयार है। भारतीय ज्ञान परंपरा व्यापक और समृद्ध रही है। अभी तक के ज्ञात स्रोत के आधार पर हम कह सकते हैं कि इसके सबूत जगह–जगह बिखरे हुए हैं। किसी भी परंपरा को जानने के लिए जरूरी होता है वहाँ का इतिहास, अभिलेख, दस्तावेज, शिलालेख, ताम्रपत्र, चर्मपत्र, भोजपत्र, मुद्राएं, भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति आदि। जब हम इनकी खोज में जाते हैं तो पाते हैं कि हमारे पूर्वज अपने इतिहास के प्रति जागरूक नहीं थे। वह इतिहास को सहेज नहीं सके और वह बहुत सारा विलुप्त हो गया। बहुत–सी प्राचीन भारत की साहित्यिक पुस्तकें चीन और तिब्बत से राहुल सांकृत्यायन लाए भारत में।

भारतीय ज्ञान परंपरा की जब हम बात करते हैं तो यह विचार सामने आता है कि दुनिया के जितने देश हैं सबकी अपनी–अपनी ज्ञान परंपराएं हैं। किसी देश की परंपरा ज्यादा समृद्ध, किसी देश की कम। और आज हमारे पास जो समूची ज्ञान परंपराएं हैं वह वैश्विक बन चुकी हैं। कुछ देशों की परंपरा तो ज्यादा समृद्ध थी, पर वह उनका संरक्षण और संवर्धन नहीं कर पाए, इससे वह विलुप्त हो गईं। कुछ लोग ज्ञान अपने तक सीमित रखते हैं और जब वह दुनिया से चले जाते हैं तो वह ज्ञान वहीं खत्म हो जाता है। वह परंपरा का रूप नहीं ले पाता। ग्रामीण भारतीय क्षेत्रों में जड़ी बूटियों के प्रयोग, उपचार की देशी विधियां, कला, संगीत, नृत्य, लोकगीत, लोकनृत्य, नोटंकी, तंत्र–मंत्र इस तरह समाप्त हुए। वेद जिन्हें श्रुत कहा गया, इस दृष्टि से गौरतलब हैं जो ज्ञान गुरूओं की हस्तांतरण की प्रक्रिया द्वारा जीवित रहे। भारत, रोम, मिश्र, यूनान, मेसोपोटामिया, बेबीलोन, अरब और अन्य देशों की समृद्ध परंपराएं थीं। कुछ की अभी भी जीवित हैं, कुछ खत्म हो गईं। बहुत सी परंपराएं अपने को आधुनिक नहीं बना पाईं। आज जो ज्ञान परंपराएं दुनिया में हैं उनमें कुछ सिर चढ़कर बोल रहीं हैं, कुछ शांत और कुछ में तूफान सी हलचल दिखाई दे रही है।

यह विडंबना रही है कि भारतीय ज्ञान परंपरा विज्ञान में उस सीमा में तब्दील नहीं हुई जो अपेक्षा की जा सकती है। कालान्तर में धर्म और संस्कृति के नाम पर ज्ञान परंपरा दूषित हो गई। जिसमें पाखंड, बाह्याडंबर, जातिगत भेदभाव, महिला उत्पीड़न, असमानता, कर्म और इच्छा शक्ति का अभाव तथा पिछड़ापन ने विस्तार पाया। यही कारण रहा कि भारतीय आमजन ज्ञान–विज्ञान से दूर होते गए। इतिहास के बारे में प्रसिद्धि है कि मानव अपनी प्रगति के लिए इतिहास का सहारा लेता है, तो इस दृष्टि से यह याद किया जाना लाभप्रद है। भारतीय अपनी गौरवपूर्ण परंपराओं को जाने, उन पर गर्व करें और हीनता के भाव का वोध समाप्त हो।

भारतीय दर्शन में ज्ञान संबंधी सभी परिकल्पनाओं के लिए 'बोध' मुख्य पृष्ठभूमि है। बोध दरअसल चेतना है जो किसी भी व्यक्ति में किसी भी वस्तु के प्रसंग में पैदा होती है।[1] हम यह कह सकते हैं कि भारतीय ज्ञान प्रणालियों ने जिस पद्धति को अपनाया, वह व्यवस्था निर्माण था। बहुत आरंभिक काल से इस प्रथा में अपने गुरू से सीखकर विचार तथा परंपरा को आगे प्रसारित करना था।[2] सभ्यता के आरंभ में ज्ञान परंपराओं का प्रसार इसी तरह हुआ।

भारतीय ज्ञान परंपरा चाहे शून्य के आविष्कार की हो, गणितीय संख्याओं की हो, शल्य चिकित्सा की हो, आयुर्वेद की हो, खगोल विज्ञान की हो, संगीत, कला, नाटक, भाषा, लिपि, व्याकरण, अध्यात्म, योग, सहिष्णुता, शांति, अहिंसा, दर्शन, वेदांत, विश्व बंधुत्व की हो ये सभी परंपराएं ज्ञान की वह स्तम्भ हैं जो दुनिया को रोशनी दिखा रही हैं। सहयोग, सेवा, परोपकार, नदियों के पास रहने, नदी पूजा, प्रकृति पूजा, वालिका पूजा, माता-पिता पूजा और संयुक्त परिवार की प्रणाली भारतीय ज्ञान की अच्छी परंपराओं में से हैं।

वेद जो भारतीय ज्ञान परंपरा के भंडार हैं। वेद के संबंध में भारत की खोज में पं. जवाहरलाल नेहरू लिखते हैं-"वस्तुतः यह हमारे पास मनुष्य के दिमाग की प्राचीनतम उपलब्ध रचना है।" मेक्समूलर ने इसे आर्य मानव के द्वारा कहा गया पहला 'शब्द' कहा है। भारतीय वेदों के बारे में अनुमान है कि यह साहित्य यूनान और इसरायल दोनों के साहित्य से पहले का है।[3]

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम व ज्ञान प्रधान संस्कृति है। यूनेस्को ने ऋग्वेद की 3800 वर्ष प्राचीन 30 पांडुलिपियों को विश्व विरासत में सम्मिलित करते हुए भी माना कि ऐसी सुदीर्घ, अक्षुण्ण व पुरातन पांडुलिपियां विश्व में अन्यत्र दुर्लभ हैं। ज्ञान प्रधानता के संबंध में अमेरिकी इतिहासविद् मार्क ट्वेन के अनुसार आज के आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की भी कई जानकारियां प्राचीन भारतीय हिंदू वांङ्मय में पहले से ही मिल जाती हैं और यह भी संभव है कि भविष्य में होने वाले नवीन अन्वेषणों व आविष्कारों के भी कई संदर्भ प्राचीन भारतीय शास्त्रों में मिल जाएं। वस्तुतः भारतीय ज्ञान-परंपरा व चिंतन का एकमेव ध्येय ही विश्व मंगल का है। प्राचीन भारतीय ज्ञान कोई रिलीजन सापेक्ष कर्मकांड न होकर सार्वभौम मानवोपयोगी ज्ञान की निधि है।[4]

भारत के अतीत की सबसे पहले तस्वीर उस सिंधु घाटी सभ्यता में मिलती है, जिसके प्रभावशाली अवशेष सिंध में मोहनजोदड़ो और पशिचमी पंजाब में हड़प्पा में मिले हैं। इन खुदाइयों से प्राचीन इतिहास की अवधारणा में क्रांति ला दी है।[5] मोहनजोदड़ो की खुदाई से यह पता चलता है कि सिंधु घाटी सभ्यता उस समय की नगर सभ्यताओं में सर्वोत्कृष्ट थी।

भारतीय ज्ञान परंपरा के स्रोत हैं वेद और उपनिषद। उपनिषदों की सबसे प्रमुख विशेषता है सच्चाई पर बल देना। जीत हमेशा सच्चाई की होती है, झूठ की नहीं। परमात्मा की ओर जाने वाला रास्ता सच्चाई से ही होकर गुजरता है। उपनिषदों की मशहूर प्रार्थना है-"असत् से मुझे सत् की ओर ले चल, अंधकार से मुझे प्रकाश की ओर ले चल, मृत्यु से मुझे अमरत्व की ओर ले चल। ऐतरेय ब्राह्मण के हर शलोक का अंत इस टेक से होता है-चरैवेति चरैवेति।"[6] भारतीय ज्ञान परंपरा कहती है ज्ञानार्जन वा किसी भी तरह की उपलब्धि के लिए संयम, आत्मपीड़न और आत्मत्याग जरूरी है।

महाभारत में गीता के दर्शन के अलावा, शासन कला, और सामान्य रूप से जीवन के नैतिक और आचार संबंधी सिद्धांतों पर जोर दिया गया है। धर्म की इस बुनियाद के बिना न सच्चा सुख मिल सकता है और न समाज में एका रह सकता है। इसका लक्ष्य है लोकमंगल, किसी विशेष वर्ग का नहीं, बल्कि पूरे विश्व का क्योंकि मर्त्यों की ये पूरी दुनिया एक आत्मनिर्भर संघटना है। लेकिन धर्म स्वयं सापेक्ष है और सत्यनिष्ठा, अहिंसा आदि जैसे कुछ बुनियादी सिद्धांतों को छोड़कर खुद समय और मौजूदा परिस्थितियों पर निर्भर करता है।[7] महाभारत में संजय के पास दिव्य दृष्टि की जो ज्ञान परंपरा थी वह अद्भुत और अकल्पनीय थी।

ईसा पूर्व छठी या सातवीं शताब्दी में पाणिनी के व्याकरण का भारतीय ज्ञान परंपरा में महत्त्वपूर्ण योगदान है। औषधि पर चरक की चरक संहिता, शल्य चिकित्सा पर सुश्रुत की पुस्तकें हमें आश्वस्त और गौरवांवित करती हैं। तक्षशिला विश्वविद्यालय विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र और कला की शिक्षा के लिए मशहूर था। अश्वघोष के नाटकों की पाण्डुलिपियों के अंश गोबी, रेगिस्तान की सरहदों पर तुरफान में मिले हैं।[8] इससे यह सिद्ध होता है कि विदेशी भारतीय ज्ञान परंपरा को अपने देशों तक ले गए।

कल्हण की राजतरंगिणी में कश्मीर का इतिहास है। जिसकी रचना ईसा की बारहवीं शताब्दी के आसपास मानी जाती है जिससे उस समय की तथ्यपरक जानकारी मिलती है। शकुंतला का सर विलियम जोंस कृत अनुवाद 1789 में प्रकाशित हुआ। यूरोप के बुद्धिजीवियों में इस खोज से हलचल सी मच गई, और पुस्तक के कई संस्करण प्रकाशित हुए। सर विलियम जोंस के अनुवाद के आधार पर जर्मन, फ्रेंच, डेनिश और इटालियन में भी इसके अनुवाद हुए।[9]

भारतीय षड्दर्षन न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत भारतीय ज्ञान परंपरा के रत्न हैं। पुराने वेदांत के आधार पर शंकर या शंकराचार्य ने अद्वैतवाद का निमार्ण किया। वर्तमान हिंदूवाद के प्रमुख दार्शनिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व यही दर्शन करता है। इंडोनेशिया, थाइलैंड, जाबा, बाली, के अनेक स्थल भारतीय पुरा कलाओं और गाथाओं से भरे पड़े हैं । फिलीपीन दीपों में लेखन कला भारत से ही ली गई है। कंबोडिया में वर्णमाला दक्षिण भारत से ली गई है और बहुत से संस्कृत शब्दों को थोड़े से हेर फेर के साथ ले लिया गया है। यूरोप वालों ने अंकगणित और बीज गणित अरबों से सीखा और अरबों ने भारत से सीखा। भारतीयों ने गणित में जो आश्चर्यजनक प्रगति की थी, वह अब बहुत प्रसिद्ध है।[10]

नवीं शताब्दी में गुजरात का मिहिर भोज उत्तर और मध्य भारत में छोटे राज्यों को मिलाकर एक संयुक्त राज्य कायम करके राजधानी बनाता है। ग्यारहवीं शताब्दी के आरंभ में राजा भोज आते हैं जो उज्जयिनी को अपनी राजधानी बनाते हैं। यह व्याकरण और कोशकार थे। साथ ही इनकी दिलचस्पी भेषज और खगोलशास्त्र में थी।[11] बिहार में भागलपुर के पास विक्रमशिला और काठियावाड में वल्लभी विश्वविद्यालय थे। गुप्त शासकों के समय में उज्जयिनी विश्वविद्यालय का उत्कर्ष हुआ। दक्षिण में अमरावती विश्वविद्यालय था।

भारतीय ज्ञान परंपरा की श्रेष्ठता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जयपुर के राजा सवाई जय सिंह ने जयपुर, दिल्ली, उज्जैन, बनारस और मथुरा में बड़ी-बड़ी वेधशालाएं बनवाई। पुर्तगाली पादरियों से खगोलशास्त्र की प्रगति की जानकारी मिलने पर उसने एक पादरी के साथ अपने आदमियों को पुर्तगाल के राजा इमानुएल के दरबार में भेजा। इमानुएल ने अपने दूत जेवियर द सिल्वा को द ला हायर की तालिकाओं के साथ जयसिंह के पास भेजा।

अपनी तालिकाओं के साथ उनकी तुलना करने पर जय सिंह इस नतीजे पर पहुंचा कि पुर्तगाली तालिकाएं कम सुनिश्चित थीं और उनमें कई गलतियां थीं। इन गलतियों का कारण उसने यह बताया कि जिन यंत्रों का प्रयोग किया गया था उनके व्यास घटिया थे ।[12] हम अपने इस ज्ञान के आधार पर ही कह सकते हैं कि सभ्यता के लगभग प्रत्येक अंग की नींव हमारे प्रागैतिहासिक पूर्वज के द्वारा डाली जा चुकी थी।[13]

भारतीय ज्ञान परंपराओं की प्रशंसा करते हुए सी जान मार्शल इस सभ्यता की तुलना समकालीन सभ्यताओं से करते हुए लिखते हैं –"इस प्रकार कुछ विशेष बातें यह हैं कि इस काल में रूई का प्रयोग वस्त्र तैयार करने के कार्यों में केवल भारत में ही होता था और 2000 अथवा 3000 वर्षों बाद तक यह पाश्चात्य जगत में नहीं फैला।"[14]

यूजीसी के अध्यक्ष ने इंडियन नालेज सिस्टम के एक कार्यक्रम में कहा–"भारत के पास एक समृद्ध और विविध ज्ञान विरासत है जो दर्शन, कला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, खगोल विज्ञान, गणित, चिकित्सा, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और नैतिकता जैसे विषयों में हजारों वर्षों में विकसित हुई है। आईकेएस में मानव ज्ञान, सभ्यता और सांस्कृतिक विरासत की अधिक व्यापक समझ प्रदान करके और बड़े पैमाने पर छात्रों, शिक्षाविदों और समाज को लाभ पहुंचाकर समकालीन उच्च शिक्षा को पूरक और समृद्ध करने की क्षमता है।"[15]

भारतीय ज्ञान परंपरा पर नई पुस्तक आई है 'भारतीय ज्ञान का खजाना' इसमें लेखक प्रशांत पोल लिखते हैं–"कुतुब मीनार के पास एक दहाई भर की ऊँचाई वाला! लेकिन यह स्तंभ बहुत पुराना है। सन् 400 के आसपास बना हुआ यह स्तंभ भारतीय ज्ञान का रहस्य है। इस लोह स्तंभ में 98 प्रतिशत लोहा है इतना लोहा होने का अर्थ है, जंग लगने की शत प्रतिशत गारंटी। लेकिन पिछले सोलह–सत्रह सौ वर्ष निरंतर धूप और पानी में रहकर भी इसमें जंग नही लगा है विज्ञान की दृष्टि में यह एक बड़ा आश्चर्य है।"[16]

भारत में लिखित साहित्य की परंपरा अति प्राचीन है। ताम्रपत्र, चर्मपत्र, ताड़पत्र, भोजपत्र आदि लेखन में उपयोगी साधन थे। भोजपत्र, 'भूर्ज' नाम के पेड़ की छाल से बनाया जाता था। यह वृक्ष, 'बेट्युला' प्रजाति के हैं और हिमालय में, विशेषतः कश्मीर में पाए जाते हैं। इस वृक्ष की छाल का गूदा निकालकर, उसे सुखाकर फिर उसे तेल लगाकर चिकना बनाया जाता था। उसके लंबे रोल बनाकर उनको समान आकार का बनाया जाता था। उस पर विशेष स्याही से लिखा जाता था। फिर उसको छेद करके एक मजबूत धागे में बांधकर उसकी पुस्तक/ग्रंथ बनाया जाता था। यह भोजपत्र उनकी गुणवत्ता के आधार पर दो ढाई हजार वर्षों तक अच्छे रहते थे। भारतीय ज्ञान परंपरा की कड़ियों की खोज में इस प्रकार की अनेक ज्ञान परंपराएं हैं।[17]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा लंबी और व्यापक है। इसके छोटे–छोटे भागों को जोड़कर एक समूचा ज्ञानकोश निर्मित करना होगा। आज पूंजीवाद और बाजारवाद के चलते झूठे ज्ञान को भी आकर्षक विज्ञापनों द्वारा जनता को प्रस्तुत किया जा रहा है। जिससे ज्ञानी भी भ्रमित हो जाते हैं। जिन ज्ञान परंपराओं का चयन हो उन परंपराओं के ज्ञान का परीक्षण जरूरी है। काल्पनिक और मनगढंत ज्ञान परंपराओं से बचना होगा। बौद्धिक संपदा और स्वतंत्रता का सम्मान होना चाहिए। ज्ञान किसी भी धर्म, संप्रदाय, जाति से जुड़ा हो उसे सामने आना चाहिए और परंपरा में शामिल होना चाहिए। असहमति और आलोचना का स्वागत होना चाहिए। संवाद की स्थिति बंद नहीं होना चाहिए। ज्ञान– विज्ञान और प्रोद्योगिकी

से वर्तमान पीढ़ी को जोड़ना होगा। अपने देश की अच्छी ज्ञान परंपराओं को जानना, उन पर गर्व करना जरूरी है। समाज तक ज्ञान सामग्री को पहुंचाना अकादमिक जगत का कार्य है।

अंत में यही कहना चाहूंगा- 'यूनान ओ मिश्र ओ रूमा सब मिट गए जहां से, अब तक मगर है बाकी नाम ओ निशां हमारा। कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौर ए जमां हमारा' -इकबाल ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

[1] भाषा आद्यंत प्रविधि, राजकुमार, वाणी प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृ. 88

[2] वही पृ. 93

[3] भारत की खोज, संक्षिप्त संस्करण, जवाहरलाल नेहरू, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद पृ. 26

[4] कालजयी भारतीय ज्ञान, भगवती प्रकाश शर्मा, प्रभात प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली, संस्करण 2024 भूमिका से

[5] भारत की खोज संक्षिप्त संस्करण, जवाहरलाल नेहरू, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद पृ. 22

[6] वही पृ. 35

[7] वही पृ. 45

[8] वही पृ. 76

[9] वही पृ. 77

[10] वही पृ. 97

[11] वही पृ. 101

[12] वही पृ. 134

[13] विश्व सभ्यता का संक्षिप्त इतिहास-रा नगीना त्रिपाठी तथा ओम प्रकाश मालवीय, सेंट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद पृ. 7

[14] वही पृ. 41

[15] द संडे गार्जयन लाइव 25.10.23 ममिदाला जगदेश कुमार

[16] भारतीय ज्ञान का खजाना-प्रशांत पोल, प्रभात प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली, संस्करण 2020 पृ. 17

[17] वही पृ. 25